किसान मेला 2013

21 और 22 फरवरी 2013

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बत्तूर

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान में 21 और 22 फरवरी 2013 को किसान मेला का आयोजन किया गया। 2009 से हर वर्ष इस मेले का आयोजन किया जाता है और यह किसान मेला का पाँचवा वर्ष है। किसान मेला का मुख्य उद्धेश्य किसानों, काष्ठ पर आधारित उद्योगों एवं वानिकी अनुसंधान संगठनों की एक बडी संख्या को एक साथ एक ही मंच पर लाना जिससे सभी को पेड खेती से सम्बन्धित मुद्यों को समझने और अपने-अपने विचारों एवं अनुभवों को आदान प्रदान करने में सहायता मिलें।

किसान मेला में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के महानिदेशक डॉ.वी.के.बहुगुणा, भा.व.से, पधारे। उन्होंने किसान मेला का उद्घाटन किया एवं उद्घाटन भाषण भी दिया। उन्होंने कहा कि किसान लोग अन्नदाता है क्योंकि वे खाद्य एवं अनाज का उत्पादन कर लाखों लोगों को प्रदान करते है। उन्होंने किसानों से अनुरोध किया कि अधिक से अधिक पेड लगाकर पर्यावरण की रक्षा करें एवं पर्यावरण के रक्षक बनें। इस सुअवसर पर महा निदेशक जी ने यह घोषणा किया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद जल्द ही तीन सप्ताह की एक अनूठा यात्रा कार्यक्रम शुरू करेगा जिसमें तमिलनाडु के किसान अन्य राज्यों में जाकर नई चीजें सीख सकें और आगे कहा कि किसानों की यात्रा में उनकी सुविधा के लिये एक

वैज्ञानिक भी जायेंगे। उस यात्रा के लिये पूरा व्यय भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा वहन किया जायेगा।

महानिदेशक जी ने सूचित किया कि सभी कृषि विज्ञान केन्द्र एवं राज्य के वन विस्तार केन्द्र के साथ भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद वन विज्ञान केन्द्र का नेटवर्क होगा। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद आने वाले वर्षों में अधिक वन केन्द्रों की स्थापना करेगा जो किसानों एवं उद्योगों को बीज एवं पौद के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने में लाभदायक सिद्ध होगा। महानिदेशक जी ने कहा कि वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान एक प्रेरणा दुकान खोलेगा जिसमें वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान द्वारा विकसित उत्पादों का व्यवसायीकरण होगा।

महानिदेशक जी ने पाँचवा वर्ष किसान मेला सफलतापूर्वक आयोजन करने हेतु वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान के निदेशक, अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों की सराहना की और बधाई भी दी। महानिदेशक जी ने वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान के रजत जयंती वर्ष का स्मरणीय पत्थर का अनावरण भी किया।

महानिदेशक जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि थाने चक्रवात से प्रभावित किसानों को विलायती सारूँ के बीज एवं पौद का वितरण करने के लिये दिसम्बर 2012 को जब वे विलुपुरम, कूडलूर एवं पुदुचेरी गये तो उन्होंने पाया कि जनशक्ति की कमी एवं उच्च लागत न होने के कारण किसानों को पेडों की कटाई में अनेक समस्या होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने यह घोषणा किया कि कटाई मशीनों को खरीदने के लिये वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान को 25 लाख रूपये उपलब्ध करया जायेगा। उन कटाई मशीनों को किसान लोग भी उपयोग कर सकते है।

महानिदेशक जी ने कहा कि किसानों के द्वारा बडी संख्या में पेडों की खेती करने पर भी अच्छी गुणवत्ता वाले रोपण सामग्री एवं बीजों की माँग बढती ही जा रही है। इसलिये उच्च गुणवता वाले पौद की उपज प्रदान करने के लिये तमिलनाडु, पुदुचेरी एवं

केरल में तीन केन्द्रों की स्थापन हेतु भारतीय बानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने 60 लाख रूपये को अलग किया है।

श्री.एम.करुणाकरन, भा.प्र.से, जिला कलेक्टर, कोयम्बत्तूर ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों में आर्थिक विकास का बहुत ही प्रभाव पडा है जिसके कारण कूडे की समस्या, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन एवं जल संसाधनों के प्रदूषण बढता ही जा रहा है। इस प्रदूषणों की समस्या को निपटाने के लिये वृक्षारोपण की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि वनीकरण हेतु तमिलनाडु में पिछले वर्ष में 64 लाख पेड लगाये गये है और इस वर्ष 65 लाख पेड लगाये जायेंगे। श्री.एम.करुणाकरन, भा.प्र.से, जिला कलेक्टर, कोयम्बत्तूर ने "स्थाई वृक्ष की खेती के लिये वृक्षारोपण प्रौद्योगिकियाँ " पर एक प्रदर्शनी का उद्घाटान किया। कुल 32 संगठनों जैसे वन विभाग, वन विकास निगम, वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक संस्थानों, काष्ठ पर आधारित उद्योगों, किसानों, स्व सेवा समूह आदि ने इस प्रदर्शनी में भाग लिया।

डॉ.कृष्णकुमार, भा.व.से, निदेशक जी ने अपने भाषण में किसान मेला का सामान्य विवरण दिया और सूचित किया कि तमिलनाडु, केरल और पुदुचेरी के कृषि भूमि में वृक्षारोपण ने गति प्राप्त की है। उन्होंने इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया कि संस्था की शोध एवं विस्तार गतिविधियाँ मुख्य रूप से विभिन्न पणधारियों की आवश्यकता एवं मांग की पूर्ति करता है। उन्होंने कहा कि कुछ वर्ष पहले विकसित किये गये नीलगिरी एवं विलायती सारूँ के प्रजातियों ने किसानों एवं उद्योगों को अच्छी प्रतिक्रिया दिया है और आगे सूचित किया कि आने वाले वर्ष में 15 नये प्रजातियों को जारी करेगा। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि लगभग 145 आर्थिक क्षमता युक्त पेड है जिन्हें किसानों के हित के लिये ही बढाया जायेगा।

श्री टी.एस.श्रीनिवास मूर्ति, भा.व.से, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक ने कहा कि तमिलनाडु में किसान लोग उच्च उद्यमशीलता दिखा रहे है। वन विभाग ने निजी भूमि में भी वृक्षारोपण करना शुरू किया है। तमिलनाडु जैव विविधता एवं हरियाली परियोजनाओं के तहत 10 करोड से अधिक पौद वितरित किया जायेंगे। उन्होंने संस्तृत होकर कार्य करने की तरीके के महत्व पर जोर दिया जहाँ अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिये सभी विभाग, अनुसंधान संस्थाएँ एवं किसान मिलकर कार्य करते है।

डॉ.एम.एच.स्वामिनाथ, उत्कृष्टता के अध्यक्ष ने अपने अभिनन्दन में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद और वन आनुवंशिक्रि एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान को किसान मेला आयोजित करने हेतु बधाई दी। उन्होंने कहा कि हमारा देश जलवायु परिवर्तन से प्रभावित है। पिछले 25 वर्षों से तापमान की गति बढती ही जा रही है। उन्होंने किसानों, उद्योगों एवं संगठनों से आग्रह किया कि वृक्षारोपण को बढाये जो कि जलवायु परिवर्तन के लिये एक मात्र उपाय है।

डॉ.एस.नागराजन, उत्कृष्टता के अध्यक्ष ने कहा कि महानिदेशक जी के द्वारा किसानों को अन्य राज्यों में दौरा लेकर जाने की घोषणा सराहनीय है। उन्होंने कहा कि ऐसे किसानों को अन्य राज्यों में लेकर जाने से वे अपने ज्ञान का लेन-देन कर सकते है एवं नई बातों को जानकर खेती करने की गतिविधियों में विकास कर सकते है।

वन अर्थव्यवस्था एवं विस्तार प्रभाग के प्रमुख श्री.के.रविचन्द्रन, भा.व.से ने सभी का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में कहा कि किसानों को कृषि भूमि में खेती एवं वृक्ष प्रजातियों के प्रबन्धन, प्रौध्योगिकियों एवं विकसित उत्पादों से सम्बन्धित मुद्यों पर संवेदनशील बनाने के उद्येश्य से वर्ष 2009 से हर साल इस मेले का आयोजन किया जाता है। उन्होंने सभा को यह सूचित किया कि इस वर्ष वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष

प्रजनन संस्थान की रजत जयंती वर्ष है और इस शुभ वर्ष का प्रारम्भ इस मेले से किया गया है। किसान मेला किसानों, काष्ठ पर आधारित उद्योगों एवं वानिकी अनुसंधान संगठनों की एक बडी संख्या को एक साथ एक ही मंच पर लाने का सुअवसर प्रदान करता है जिससे सभी को पेड खेती से सम्बन्धित मुद्यों को समझने और अपने-अपने विचारों एवं अनुभवों को आदान प्रदान करने में सहायता मिलें। यह मेला वैज्ञानिकों एवं सरकारी अधिकारियों को इस बात पर ध्यान दिलाता है कि अनुसंधान एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों के समस्याओं का समाधान करें और वानिकी एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में हुए नवीनतम विकास की जानकारी प्रदान करें।

तमिलनाडु, पुदुचेरी, केरल राज्यों के जिलों से करीब 1700 किसानों ने इस किसान मेले में भाग लिया। अंत में वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान के समूह सामान्यक (अनुसंधान) श्री टी.पी.रघुनाथ जी ने इस मेले में आये हुए सभी अतिथियों, किसानों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देते हुए इस कार्यक्रम का स्मापन किया।

மரம் வளர்ப்போர் விழா
TREE GROWERS MELA 2

மரம் வளர்ப்போர் விழா - 2013
TREE GROWERS MELA 2013